हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

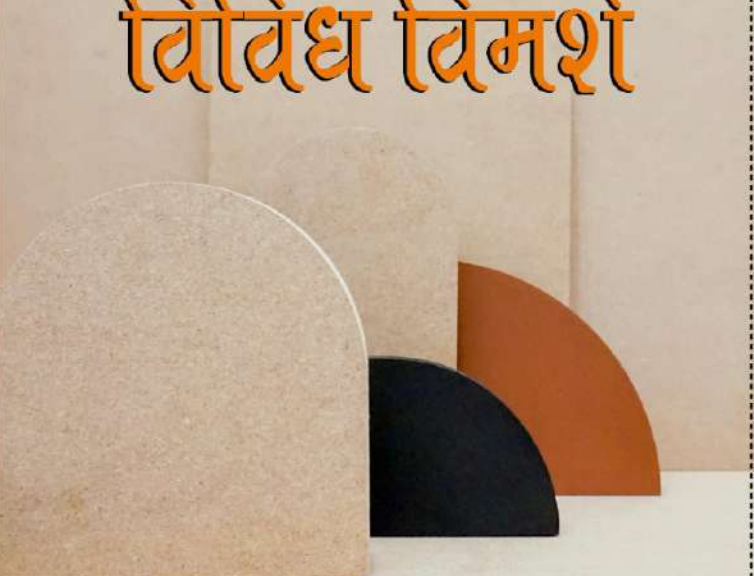

संपादन

डॉ. एस. प्रीति • डॉ. एस. रज़िया बेगम
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

डॉ. एस. प्रीति, डॉ. एस. रज़िया बेगम
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम

ISBN 978-93-92703-99-7

₹ 600

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

संपादक

डॉ. एस. प्रीति ☼ डॉ. एस. रजिया बेगम
डॉ. मों. सहिदुल इस्लाम

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना पुस्तक या इसके किसी अंश को संक्षिप्त या परिवर्धित कर प्रकाशित करना, फिल्म बनाना कानूनन अपराध है।

सृजनलोक प्रकाशन

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISBN : 978-93-92703-99-7

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024
प्रकाशक :
सृजनलोक प्रकाशन
बी-1, दुग्गल कॉलोनी, खानपुर, नई दिल्ली - 110062
मोबाइल : 7654926060
ईमेल : srijanlok@gmail.com
आवरण सज्जा : संतोष श्रेयांस
मुद्रक : बी.क्यू.एस. सर्विसेज, खानपुर नई दिल्ली - 62

Hindi Sahitya Me VIvidh Vimarsh
Edited By : Dr. S. Preeti, Dr. S. Razia Begum, Dr. Md. Sahidul Islam
Published by : Srijanlok Prakashan,
B - 1, Duggal Colony, Khanpur, New Delhi – 110062

₹ **600**

अनुक्रम

1.	डॉ. नरेश कुमार	प्रकृति चिन्तन के कवि केदारनाथ सिंह	5
2.	डॉ. एस प्रीति	"अब और नहीं" कविता में दलित चेतना	11
3.	डॉ. एस. रजिया बेगम	बदनाम बस्ती (जानकीपुल - प्रभात रंजन) के बहाने : तवायफ संस्कृति - एक परिचर्चा	14
4.	डॉ. एस. प्रीतिलता	ममता कालिया की उपन्यास 'दौड' में महानगरीय जीवन	19
5.	केसरबेन राजपुरोहित	सामाजिक सोच आज भी स्त्री की विवशता...	22
6.	डॉ. कला. ए.	हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श	29
7.	डॉ. अनिता सिंह	हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय विमर्श - एक दृष्टि	35
8.	जोरम आपी	हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श का स्वरूप	42
9.	प्रीति गुप्ता	आधुनिक हिंदी कविता में वृद्ध विमर्श	49
10.	प्रो. रेखा मेनन	हाशिये पर बच्चे	54
11.	डॉ. वी. जयलक्ष्मी	हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श	62
12.	एस. राजलक्ष्मी	वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन	68
13.	सविता राय	वापसी कहानी में वृद्ध विमर्श	72
14.	डॉ. सावित्री देवी,	"अपने-अपने पिंजरे" भाग-२ आत्मकथा में दलित विमर्श	75
15.	डॉ.लैजा पी जे	आदिवासी स्त्री की संघर्ष भरी दास्तान का दस्तावेज़ वाल्टर भेंगरा तरूण का उपन्यास 'लौटते हुए'	82
16.	डॉ. सपना पेलापकर	हिंदी साहित्य में वृध्द विमर्श	87
17.	डॉ. निशा मुरलीधरन	डॉ. सुशीला टाकभौरे की कविताओं में दलित एवं नारी विमर्श	92
18.	डॉ. के. आनन्दी	हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति	97
19.	कंचना कुमारी	हिन्दी साहित्य में बाल विमर्श	101
20.	डॉ. ए रमणी	हिन्दी साहित्य में महानगरीय जीवन	109
21.	डॉ. मो. मजीद मियाँ	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का महत्व	114
22.	डॉ. राज कुमार	कवि गणेश गनी की कविताओं में अभिव्यक्त पांगी जनजातीय समाज का बदलता परिदृश्य	119
23.	दीपाली सुतार	'ओमप्रकाश वाल्मीकि' की कहानियों में दलित अस्मिता की लड़ाई	128
24.	डॉ. शबनम आलम	नार्सिसिस्टक (आत्ममुग्ध) मानसिकता का यथार्थपरक विश्लेषण : एक पत्नी के नोट्स	135
25.	लया.एन	उपन्यासों में दलित जीवन का यथार्थ	145

26.	डॉ. एस. विजया	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	149
27.	रेखा शर्मा	सामजिक संरचना में परिवर्तनकारी भूमिका के वाहक हिंदी कहानियों के स्त्री पात्र	154
28.	गीतु एम	'पिता' कहानी में वृद्ध विमर्श का मार्मिक उद्वेग	161
29.	प्रिनसी पी ए.	नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'हरी बिंदी' कहानी	164
30.	एस. जानकी	श्यामलाल राही कृत 'टेसू के फूल' उपन्यास में दलित विमर्श	170
31.	नम्रता कुमारी	उषाकिरण खान की कहानियों में पर्यावरण	178
32.	रबोम बेलो	'स्त्री की पहचान और अस्तित्व का प्रश्न 'भया कबीर उदास' और 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास के सन्दर्भ में	184
33.	सची नायक	नर्मदेश्वर की कहानियों में आदिवासी	190
34.	इ. जाक्कुलिन डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	हिन्दी साहित्य में पारिवारिक विमर्श : मालती जोशी की कहानियों संदर्भ में	196
35.	पुरी गोदावरी	'गोबर गणेश' उपन्यास में चित्रित ग्रामीण एवं महानगरीय जीवन का यथार्थ	201
36.	साईमीरा जोशी	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	205
37.	रेखा कुमारी (शोधार्थी)	तेजेंदर शर्मा की कहानियो में प्रवासी साहित्य के विविध आयाम	211
38.	रेणुका देवी	मध्यकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री	216
39.	वि अमुधा डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित भारतीय संस्कृति	225
40.	वेंकट शिल्पा काकि डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	हिन्दी बाल कहानी साहित्य में बाल विमर्श	229
41.	कु. उल्का कालेकर	किन्नर विमर्श	234
42.	राखी	नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री स्वाधीनता का स्वरूप	240
43.	देवा बासफोर	लता अग्रवाल की कहानियों में किन्नर समाज की अभिव्यक्ति	244
44.	अरुण कुमार	कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन की समस्यायें	250
45.	डॉ. रंजना राय	रविन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों में स्त्री विमर्श	254
46.	कनकलता श्रीवास्तव	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में अभिव्यक्त परिवार के विविध प्रकार	262
47.	महेश्वर	डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में 'दलित विमर्श'	267

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित भारतीय संस्कृति

वि अमुधा,
शोधार्थी
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस्ड स्टडीज
(विस्टास), पल्लावरम, चेन्नई

डॉ अनुराधा पाकलपाटि
शोध निर्देशिका असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस्ड स्टडीज
(विस्टास) पल्लावरम

सार : इस प्रपत्र में 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित भारतीय संस्कृति' शीर्षक के अंदर उनके उपन्यासों में प्रवासी भारतीयों के संस्कृति का पालन करने का ढंग को दर्शाया है। साथ ही मॉरिशस के प्रवासी जीवन में भारतीयों ने अपने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जिस तरह भारतीय संस्कारों और संस्कृति का सटीक पालन करते आ रहे हैं, उसे भी दर्शाया है।

मुख्य शब्द : संस्कार, रीति–रिवाज़, त्योहार, ग्रन्थ, मेला

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार का श्रेय प्रवासी हिंदी लेखकों को जाता है, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता को बनाए रखते हुए साहित्य को सृजन किया। साथ ही विदेशियों को इसके प्रति आकर्षित किया। प्रवासी हिंदी लेखक अपने कृतियों एवं लेखन से देश और विदेश की विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय कर रहे हैं। प्रवासी लेखकों में से कुछ उल्लेखनीय नाम हैं – अभिमन्यु अनत, सुधा ओम ढींगरा, राजेंद्र यादव और ब्रजेन्द्र कुमार आदि। श्री अभिमन्यु अनत जिन्होंने अपने साहित्य के ज़रिए पूरे विश्व को प्रवासी भारतीयों के जीवन के न केवल सामाजिक, राजनीतिक अंश को दर्शाया है बल्कि उनके धार्मिक और सांस्कृतिक अंश को भी दर्शाया है।

अभिमन्यु अनत : मॉरिशस के अग्रणी साहित्यकार अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1937 में मॉरिशस के उत्तर प्रान्त में स्थित त्रियोले गाँव में एक निर्धन परिवार में हुआ था। अभिमन्यु अनत जी एक साधारण पृष्ठभूमि से ऊपर उठकर अंतर्राष्ट्रीय साहितियक क्षितिज में अपना पहचान बना लिया था। "उन्होंने महात्मा गांधी संस्थान, मॉरिशस में 18

वर्षों तक हिंदी का अध्ययन किया और 3 वर्ष तक वे मॉरिशस सरकार, युवा मंत्रालय के नाट्यकला विभाग में नाट्य प्रशिक्षक रहे।"1

"संस्कृति में उन साधनों को सम्मानित किया जाता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्राकृतिक पर्यावरण के प्रभावों को नियंत्रित करता है।"2 सुविधा की दृष्टि से साधनों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है। "पहला वस्तुओं का वर्ग, दूसरा प्रविधियों का वर्ग और तीसरा विश्वासों तथा मूल्यों का वर्ग।"3 प्रविधियों के वर्ग में उन उपायों को रखते हैं जिनके द्वारा हम विभिन्न प्रकार के काम करते हैं, जैसे लिखना,बोलना, सामाजिक जीवन आदि। विश्वासों और मूल्यों का सम्बन्ध व्यक्ति की मान्यताओं से है और इनका प्रभाव सीधा आदमी के आध्यात्मिक एवं नैतिक सौंदर्य में दिखाई देता है।

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित भारतीय संस्कृति

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में यह दिखाया है कि अप्रवासी भारतीयों ने स्वयं मर—मर कर भी अपनी संस्कृति और आदर्शों को हमेशा जीवित रखा। उनके उपन्यासों के अप्रवासी भारतीय पात्रों की धार्मिक एवं नैतिक मान्यताएँ भारतीय है। उनके उपन्यासों में सारा वातावरण भारतीय लगता है। उदाहरण के लिए उनके 'लाल पसीना उपन्यास में एक उल्लेख है "काली माई का चौंतरा, हनुमान पूजा, रामायण पाठ, टोना—टोटका, भूत—प्रेतों की कथा, भजन—कीर्तन और मुर्दों को जलाए जाने के संकेत, मॉरिशस के लोक जीवन में पाए जाने वाले तत्व,भारतीय लोक विश्वास और आस्थाओं के चिन्ह हैं जो वहाँ सदियों के बाद आज भी ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं।"4 मॉरिशस के विवाह संस्कार में जन्म कुंडली देखना, ग्रह नक्षत्र आदि पर भी विश्वास रखते हैं। ऐसी मान्यता है कि स्त्री और पुरुष कि कुंडली के मेल होने पर ही उनके जीवन सुखी और सद्भावपूर्ण होता है।

मॉरिशस की सांस्कृतिक चेतना में महावीर हनुमान की पूजा का ज़िक्र कई जगह में मिलता है। 'लाल पसीना' उपन्यास में देखते हैं कि हर मज़दूर के घर में एक छोटा सा मंदिर हनुमान जी के लिए बनाकर रोज़ पूजा पाठ करते हैं। हुनमान जी का पूजा करना इन अप्रवासी भारतीयों के लिए अपने मनोबल बढ़ाने का एक कार्य है। भारतीय संस्कृ ति में पावन गंगा जल का सर्वोच्च स्थान है। जन्म से मरण तक होने वाले हर अनुष्ठान में इसी जल के संस्पर्श से पावनता और निर्मलता का प्रादुर्भाव होता है। मॉरिशस के भारतीय मूल के लोग वहाँ के परी तालाब के जल को गंगा—सा पवित्र मानकर उनके जीवन के हर संस्कृतिक क्रिया—कलाप में उसका प्रयोग करते हैं।

रामायण, महाभारत का पठन :— रामायण और महाभारत, भारतीय संस्कृति के मूल ग्रन्थ माने जाते हैं। मॉरिशस के अनेक अप्रवासी भारतीय परिवार के सभी घरों में रामायण का पठन एक अनिवार्य काम

है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में लालमन अपने खेत में काम करने वाली सीता के घर की दीवार पर रामायण महाभारत के कुछ चित्रों को देखकर सोचता है– "क्या वे दिन सच्चे थे? क्या सचमुच राम और कृष्ण कभी इस धरती पर थे? तब तो रावण और कंस भी रहे होंगे? सीता का हरण भी हुआ होगा और महाभारत का युद्ध भी। तो फिर दुनिया में नया क्या है?"5 इस रामायण में जाने वाले मज़दूरों के लिए प्रेरणा स्रोत रही। मॉरिशस के लोग राम राज्य की स्थापना के स्वप्न संजोते रहे और रामायण के पाठ से अपनी गुलामी की मुक्ति की कामना करते थे। अभिमन्यु अनत जी कहते हैं, "मॉरिशस के लोगों ने अपनी मुक्ति की लड़ाई तुलसी की रामायण को आधार बनाकर लड़ी और विजय की वैजयंती माला उनके गले में इस कृति के प्रसाद स्वरूप पड़ी।"6 अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'एक उम्मीद और' में प्रिया एक गर्भवती स्त्री है। वह एक अप्रवासी भारतीय स्त्री जो अपने परिवार के साथ मॉरिशस में रहती है। उसकी सास उसे रोज़ बिठाकर रामचरितमानस और महाभारत की कहानियाँ सुनाती है। उसकी सास का मानना है कि ऐसे करने से शिशु की भलाई होगी।

अन्धविश्वास :– अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में स्थान–स्थान पर अंधविश्वासों को देखा जा सकता है। "मॉरिशस में अप्रवासी भारतीय अनेक अंधविश्वास में ग्रस्त हैं। ये अंधविश्वास उनके अज्ञान का कारण है और उसकी प्रगति, विकास और उन्नति में जबरदस्त बाधक हैं।"7

'जम गया सूरज' उपन्यास में लालमन की माँ इस अंधविश्वास से ग्रस्त है यदि व्यक्ति कोयले से सफ़ेद मिट्टी की दीवारों पर लिखता है तो उसका कर्ज बढ़ता है। हर फरवरी मॉरिशस के सांस्कृतिक जीवन में बहुत महत्त्व है। इस पर्व में सामूहिक गीत गाकर स्त्रियाँ इंद्र देवता को रिझाने का काम करती हैं।

लोकगीत गायन :– लोकगीत लोक जीवन की धार्मिक, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति होते हैं। मॉरिशस समाज में भोजपुरी के लोकगीतों को होली, कजरी, आल्हा, ठुमरी आदि पर्वों में गए जाते हैं। भोजपुरी गीतों के द्वारा मज़दूरों की मर्म व्यथा का चित्रण हुआ है। 'लाल पसीना' उपन्यास में भारतीयों की व्यथा–कथा विभिन्न गीतों के माध्यम से अभिव्यक्ति हुई हैं:–

"सुनी के नाम हम मारीच की दीपवा हो
पहुँचे री हम पाने को सोनवा
बदले में मिलेला भाई बाँसों की मार हो।।
छिलछिल गयली सब मजदूरन की पीठवा
कोलू के बैल बने इखन पीसन को
छोड़ था दस अपन कुली बनान को।"8

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में धार्मिक विचार

जब से मज़दूर भारत से मॉरिशस गए तब से सभी त्योहारों को उत्साह एवं उमंग के साथ मनाते आ रहे हैं। "मॉरिशस में भारतीय संस्कृति को अपनाते हुए वहाँ के लोग धार्मिक विश्वास भारतीय संस्कृति को लेकर अपनाते हैं।" अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में इसकी झलक मिलती है – पंडाल में बैठकर कथा सुनना उनके मन को अच्छा लगता है। 'जम गया सूरज' उपन्यास में देखें तो लालमन की माँ सूर्य की पूजा करती हैं, हरी कथा सुनती है। मॉरिशस में रहने वाले अप्रवासी भारतीयों को अपना भारतीय संस्कृति अतिप्रिय लगती है।

निष्कर्ष

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति की धारा का अविछिन्न रूप प्रवाहित हुआ है। मॉरिशस के अप्रवासी भारतीयों ने विवाह, शिवलिंग पूजन, हनुमान पूजन , रामायण सुनना, गंगा का यशोगान, सूर्या उपासना आदि संस्कारों का पालन सजग रूप से करते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति का अभिन्न सम्बन्ध है। भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में हिंदी साहित्य की हमेशा मुख्य भूमिका रही है। "भारतीय हिंदी साहित्य की मुख्य विधा के रूप में प्रवासी हिंदी साहित्य विक्सित हो रही है। प्रवासी हिंदी साहित्य विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के वर्चस्व अध्यद्वको समृद्ध कर रहा है। विदेशी संस्कृति में रह रहे हमारे प्रवासी साहित्यकारों के मन में भारतीयता रची–बसी है।"9 प्रवासी हिंदी साहित्य की रचना विदेशों में होने के बावजूद इसका मूल रूप से भारत से ही जुड़ी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय संस्कृती के उन्नयन में प्रवासी साहित्यकार, संपादक द्वय अमित कुमार गुप्ता, सुश्री ज्योति कुशवाहा वान्या पुब्लिकेशन्स 2021, पृ. 157
2. वही पृ. 158
3. वही पृ. 159
4. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन पृ. 150
5. अभिमन्यु अनत, जम गया सूरज, राजकमल प्रकाशन, पृ. 115
6. भारतीय संस्कृती के उन्नयन में प्रवासी साहित्यकार, संपादक द्वय अमित कुमार गुप्ता, सुश्री ज्योति कुशवाहा वान्या पुब्लिकेशन्स 2021, पृ. 157
7. भारतीय संस्कृति के उन्नयन में प्रवासी साहित्यकार वन्य पुब्लिकेशन्स 2021, पृ. 159
8. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन पृ. 117
9. प्रवासी हिंदी साहित्य और संस्कृति का स्वरूप डॉ सुनील पाटिल वन्य पुब्लिकेशन्स 2021, पृ. 48